

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक की बार बार उठाई गई खबर पर - NGT की बड़ी कार्रवाई

6000 करोड़ के अवैध स्कैप साम्राज्य पर STF, 765 इकाइयों पर सीलिंग और 5 करोड़ परफॉर्मेंस गारंटी तक मायापुरी में 48 घंटे का अल्टीमेटम, 2019 में 765 इकाइयों को नोटिस और अब पुलिस विजिलेंस - NGT ने कहा “अवैध काम पुराना है तो अधिकार नहीं बन जाता”

प्रस्तुतकर्ता पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

पिछली रिपोर्ट में हमने 2018-2019 तक की कार्रवाई बताई थी, अब इसमें इसी महीने सितंबर 2026 का ताजा NGT नोटिस प्रस्तुत किया जा रहा है और लेख के अंत में आपकी जानकारी हेतु पिछली रिपोर्ट भी प्रस्तुत

पश्चिमी दिल्ली के मायापुरी औद्योगिक क्षेत्र में अवैध स्कैप कारोबार पर NGT की कार्रवाई रुकी नहीं है। पुरानी फाइल बंद होने के बाद, अगस्त 2024-2025 की रिपोर्ट पर कि मायापुरी में फिर से अवैध रूप से दोपहिया वाहनों को सड़क पर हथौड़े-छेनी से तोड़ा जा रहा है, इंजन, साइलेंसर, शॉकर खुले में पड़े हैं, NGT ने दोबारा स्वतः संज्ञान लिया।

मुख्य बिंदुवार - पुरानी + नई कार्रवाई का पूर्ण विवरण

बिंदु 1: पुरानी कार्रवाई का संक्षिप्त इतिहास (जो पिछली रिपोर्ट में था)

- कारण: भारी वाहनों को अवैज्ञानिक ढंग से गैस कट्टर से तोड़ना, जहरीला धुआं, तेल-केमिकल से वायु प्रदूषण।
- NGT के 4 बड़े आदेश: मई 2015, अक्टूबर 2018, 29 जनवरी 2019, 11 अप्रैल 2019 को बंद करने के निर्देश।

- STF गठन: 25 अक्टूबर 2018 को जस्टिस आदर्श कुमार गौयल ने 7 सदस्यीय STF बनाई - CPCB, DDA, DPCC, DSIIDC, SDMC/MCD, DM वेस्ट (नोडल अधिकारी), DCP।
- सीलिंग: 13 अप्रैल 2019 देर रात SDM का सार्वजनिक नोटिस - 48 घंटे में माल हटाओ। DPCC द्वारा 765 इकाइयों को बंद/सीलिंग नोटिस।

- जुर्माना: NGT ने दिल्ली सरकार पर 5 करोड़ की परफॉर्मेंस गारंटी CPCC के पास जमा करके का आदेश दिया था, DPCC ने प्रति इकाई 1 लाख पर्यावरण क्षतिपूर्ति लगाई।

बिंदु 2: नया NGT नोटिस - इसी महीने सितंबर 2026 का ताजा आदेश [NEW UPDATE]



यह इस रिपोर्ट का सबसे नया हिस्सा है:

- केस क्या है: Original Application जो अगस्त 2024 की अखबार रिपोर्ट पर दर्ज हुई - "मायापुरी में अवैध स्कैप, अतिक्रमण और प्रदूषण फिर शुरू"

- सुनवाई दिनांक: 29 मई 2026 को प्रिंसिपल बेंच, अध्यक्ष न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव की बेंच में सुनवाई हुई।

- MCD ने NGT को बताया: रहमाने मार्च 2026 से 7.2 किमी में अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया, 150 से ज्यादा मशीनरी जब्त की, लेकिन सुबह-सुबह पाइप कटिंग फिर शुरू हो जाती है।
- DSIIDC ने कहा: हमारा रोल सीमित है, असली लेसर ऑथॉरिटी DDA है।

- NGT का नया आदेश (29 मई 2026): MCD की मांग पर ट्रिब्यूनल ने मायापुरी थाने के SHO को Respondent No. 8 के रूप में पक्षकार बनाया और रजिस्ट्री को नोटिस जारी करने का निर्देश दिया।
- अगली सुनवाई: 15 सितंबर 2026

को तय की गई है। इसी दिन NGT सभी एजेंसियों के जवाब और पुलिस विजिलेंस की रिपोर्ट देखेगा।

> नोटिस की प्रति का सार: ₹MCD Informs NGT Illegal Units Continue Despite Drives... The tribunal directed that the SHO of the Mayapuri police station be added as Respondent No 8... Matter posted for further hearing on September 15."

बिंदु 3: उल्लंघन कौन से कानूनों का ? 2 सितंबर 2024 के आदेश में NGT ने स्पष्ट लिखा:

"Air Act 1981, Water Act 1974, Environment Protection Act 1986, Hazardous Waste Rules 2016 और Solid Waste Management Rules 2016 का उल्लंघन हो रहा है।" इन इकाइयों के पास DPCC की Consent to Operate नहीं है और न ही कोई Effluent Treatment Plant है।

बिंदु 4: व्यापारियों को क्या करना होगा ?

1. RVSF - Registered Vehicle Scrapping Facility के बिना कोई ELV नहीं तोड़ सकता।
2. DPCC की गाइडलाइंस के अनुसार तेल, क्लूट, बैटरी निकालना अनिवार्य।
3. अतिक्रमण - सड़क पर मोटर पाटर्स रखना अब सीधा पुलिस केस बनेगा, क्योंकि SHO खुद पक्षकार है।

मायला 2010 के रजिस्ट्रेशन लीक (Cobalt-60 से 1 मौत) से लेकर 2019 की सीलिंग हिंसा और अब 2026 में पुलिस को पक्षकार बनाने तक पहुंच गया है। NGT का संदेश साफ है - रोजगार के नाम पर ब्लैकमेलिंग नहीं चलेगी।

जनहित में मांग है कि 15 सितंबर 2026 की सुनवाई की रिपोर्ट सार्वजनिक हो और DDA वैकल्पिक RVSF जोन बनाकर छोटे व्यापारियों को वैज्ञानिक ट्रेनिंग दे, ताकि 6000 करोड़ का कारोबार मौत का धुआं न बने।

NGT का हथौड़ा जारी - मायापुरी पर इसी महीने 15 सितंबर को नई सुनवाई, SHO को बनाया पक्षकार

“पूर्व रिपोर्ट

NGT का हथौड़ा - मायापुरी के 6000 करोड़ के अवैध स्कैप साम्राज्य पर सीलिंग, 7 सदस्यीय STF का गठन और 765 इकाइयों को बंद करने का नोटिस

वैज्ञानिक तरीके के बिना भारी वाहनों को काटने, जहरीला धुआं और तेल-केमिकल से प्रदूषण पर NGT सख्त; 48 घंटे में माल हटाने का अल्टीमेटम, पर्यावरण क्षति पर जुर्माना और चौफ सेक्रेटरी तलब

संजय कुमार बाठला मुख्य संपादक परिवहन विशेष

क्या है पूरा मामला ? पश्चिमी दिल्ली के मायापुरी औद्योगिक क्षेत्र में दशकों से चल रहे अवैध स्कैप कारोबार पर राष्ट्रीय स्वतः अधिकरण (NGT) ने सबसे सख्त रुख अपनाया है। NGT ने संज्ञान लिया था कि मायापुरी स्कैप मार्केट में भारी वाहनों और कबाड़ को बिना वैज्ञानिक तरीकों के, खुले में गैस कट्टर से तोड़ा जा रहा है, जिससे जहरीला धुआं, केमिकल और तेल निकलकर स्वा-यानी और जमीन को बुरी तरह प्रदूषित कर रहे हैं। यह कारोबार लगभग 6,000 करोड़ सालाना का बताया जाता है।

मुख्य बिंदुवार - NGT के आदेशों का क्रमवार विवरण

बिंदु 1: कार्रवाई का कारण और NGT के 4 बड़े आदेश

NGT ने इस मामले में 2013 से ही संज्ञान ले रखा है, पर मुख्य 4 आदेश हैं:

- मई 2015, अक्टूबर 2018, 29 जनवरी 2019 और 11 अप्रैल 2019 - सभी में NGT ने निर्देश दिया कि "मायापुरी में अवैध रूप से चल रही, केमिकल, तेल और जहरीला धुआं पैदा कर वायु प्रदूषण, गैस और बीमारियां फैलाने वाली सभी स्कैप इकाइयों को बंद किया जाए।"

- 11 अप्रैल 2019 को NGT ने तो दिल्ली के चौफ सेक्रेटरी और DPCC को शो-जॉन नोटिस जारी कर कहा था कि बताओ क्यों न बुरे सिविल कारावास की सजा दी जाए, अगर यह अवैध गतिविधि चलती रहे।

बिंदु 2: सात सदस्यीय विशेष कार्य बल (STF) का गठन - आदेश दिनांक 25 अक्टूबर 2018 स्वतः संज्ञान लेते हुए NGT अध्यक्ष न्यायमूर्ति आदर्श कुमार गौयल की बेंच ने 25 अक्टूबर 2018 को 7 सदस्यीय STF बनाई।

STF में शामिल एजेंसियां:

1. केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB)
2. दिल्ली विकास प्राधिकरण (DDA)
3. दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (DPCC)
4. DSIIDC
5. दक्षिणी दिल्ली नगर निगम (SDMC) / MCD
6. जिला मजिस्ट्रेट (DM) वेस्ट ज़ोन - नोडल अधिकारी
7. जिला पुलिस प्रमुख (DCP)

निर्देश: STF तुरंत अवैध गतिविधि रोकने के कदम उठाए और प्रदूषण फैलाने वालीं पर कार्रवाई करे, और चौफ सेक्रेटरी को रिपोर्ट दे। चौफ सेक्रेटरी रर नक्षीने इसकी निगरानी करेंगे।

बिंदु 3: नोटिस और सीलिंग - 48 घंटे का अल्टीमेटम

- 13 अप्रैल की देर रात SDMC द्वारा सार्वजनिक नोटिस जारी किया गया कि सभी अवैध इकाइयां 48 घंटे में अपना माल हटा लें।

- DPCC ने 2019 में 765 इकाइयों को नियम उल्लंघन पर बंद करने और सीलिंग के नोटिस जारी किए थे।

- MCD ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि मार्च से 7.2 किमी में अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया, 150 से ज्यादा मशीनरी जब्त की।
- सीलिंग के दौरान 30 से ज्यादा लोग, पुलिसकर्मी सहित घायल हुए, व्यापारी गड़क गए थे।

बिंदु 4: जुर्माना और रिपोर्ट - NGT ने क्या कहा ?

- NGT ने कहा कि केवल बंद करने का नोटिस काफी नहीं, पर्यावरण को हुए नुकसान के लिए जुर्माना वसूलो।
- दिल्ली सरकार को CPCB के पास 5 करोड़ की परफॉर्मेंस गारंटी जमा करने को कहा गया,

क्योंकि वह कार्रवाई करने में विफल रही।

- DPCC ने कई इकाइयों पर 1 लाख पर्यावरण क्षतिपूर्ति (Environmental Damage Compensation) का जुर्माना लगाया।
- NGT ने 12 अप्रैल 2019 को कार्रवाई से नाखुश होकर चौफ सेक्रेटरी को तलब किया था।
- नवीनतम सुनवाई 29 मई 2025 को NGT अध्यक्ष न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव की बेंच ने पुलिस को भी पक्षकार बनाने को कहा, क्योंकि सुबह-सुबह फिर पाइप कटिंग शुरू हो जाती है।
- बिंदु 5: वाल्व स्क्रीनिंग नीति से क्या संबंध ?
- मायापुरी कांड ही कारण है कि भारत सरकार ने Vehicle Scrapping Policy लाई।
- अवैज्ञानिक स्क्रीनिंग पर रोक - केवल Registered Vehicle Scrapping Facility (RVSF) से ELV (End of Life Vehicle) तोड़ सकती है।
- CPCB गाइडलाइंस - तेल, क्लूट, बैटरी, एयरबैग को वैज्ञानिक तरीके से निकालना अनिवार्य।

- दिल्ली में 10 साल पुराने टैगल और 15 साल पुराने पेट्रोल वाहनों पर प्रतिबंध का एक कारण यही अवैध स्क्रीनिंग से होने वाला प्रदूषण भी है।

संवादकीय निष्कर्ष: मायापुरी केवल कबाड़ बाजार नहीं, दिल्ली के केन्द्रों में जमी राख है। 6000 करोड़ के कारोबार के लिए कुछ लोगों को मौत के घुट्टे में कमना का अधिकार नहीं दिया जा सकता। NGT के आदेश साफ हैं - "अवैध काम लंबे समय से हो रहा है, इसका महालाब यह नहीं कि इसे करने का अधिकार मिल गया। वैकल्पिक जमीन पहले दो, फिर बंद करो - यह कानून तोड़ने वाली की ब्लैकमेलिंग है।"

जरूरत है STF की रिपोर्ट को सार्वजनिक करने की और औपचारिक स्कैप सेंटरों की क्षमता बढ़ाकर इन छोटे व्यापारियों को प्रो भी एकीकृत करने की, ताकि रोजगार भी बचे और पर्यावरण भी।

टॉलवा आफ लिबरलाइजेशन एंड वेल्फेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
<https://tolwa.com/about.html> | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार



पिंकी कुंडू

मॉडल:

- तुरंत एफआईआर स्थानान्तरण: स्थानीय थाने प्रथम संपर्क बिंदु बने रहते हैं, लेकिन मामले में तुरंत जिला/शहर साइबर इकाइयों को भेजे जाते हैं जो डिजिटल फॉरेंसिक और वित्तीय धोखाधड़ी ट्रेसिंग में प्रशिक्षित हैं।

- गोल्डन ऑवर प्रतिक्रिया: साइबर धोखाधड़ी के बाद शुरुआती कुछ घंटे बेहद अहम होते हैं। त्वरित स्थानान्तरण से जांचकर्ता बैंकों और भुगतान प्लेटफॉर्मों से समन्वय कर संदिग्ध लेन-देन को फ्रीज कर सकते हैं।

- साक्ष्य संरक्षण: डिजिटल साक्ष्य (IP लॉग्स, सिम डेटा, चैट हिस्ट्री) जल्दी गायब हो सकते हैं। विशेष इकाइयों इन्हें सुरक्षित कर शीघ्र विश्लेषण करती हैं।
- केंद्रीकृत समन्वय: साइबर अपराध अक्सर एक ही क्षेत्राधिकार तक सीमित नहीं रहता। विशेष इकाइयों बैंकों, टेलीकॉम और ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों से राज्य और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेहतर समन्वय कर सकती हैं।

- वरिष्ठ पर्यवेक्षण: ज़िला एसपी और पुलिस आयुक्त स्थानान्तरण की निगरानी करते हैं, जिससे जवाबदेही सुनिश्चित होती है और नौकरशाही देरी घटती है।

अन्य राज्यों को क्यों अपनाना चाहिए:

1. पीड़ित-हितैषी पहुँच: नागरिक किसी भी स्थानीय थाने में शिकायत दर्ज कर सकते हैं, क्षेत्राधिकार की चिंता नहीं।
2. तेज रिकवरी दरें: शुरुआती

हस्तक्षेप से धोखाधड़ी वाले लेन-देन फ्रीज होने की संभावना बढ़ती है।

3. बेहतर तकनीकी गुणवत्ता: विशेष इकाइयों जटिल डिजिटल साक्ष्य और सीमा-पार धोखाधड़ी संभालती हैं।
4. कम प्रशासनिक देरी: शिकायत दर्ज करने और तकनीकी जांच को अलग किया जाता है।
5. राष्ट्रव्यापी विस्तार योग्य: इसे NCRP (राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल) और हेलपलाइन 1930 से जोड़ा जा सकता है।

चुनौतियाँ और सुरक्षा उपाय:

- क्षमता संबंधी मुद्दे: विशेष इकाइयों में पर्याप्त स्टाफ और प्रशिक्षण होना चाहिए।
- डुप्लीकेशन जोखिम: एक ही धोखाधड़ी के लिए कई एफआईआर को केंद्रीकृत रूप से सेफ्टिफर करना होगा।
- इंफ्रास्ट्रक्चर आवश्यकताएँ: फॉरेंसिक लैप्स, AI आधारित धोखाधड़ी पहचान और अंतर-राज्यीय समन्वय पोर्टल्स में निरंतर निवेश जरूरी है।

कर्नाटक मॉडल साइबर अपराध पुलिस में प्रेम-चेन्नई है। यह शिकायत और जांच के बीच की खाई को पाटता है, पीड़ितों को सशक्त बनाता है, धन की रिकवरी को मजबूत करता है और साक्ष्य प्रबंधन को बेहतर बनाता है। दिल्ली, हरियाणा और अन्य राज्यों को इसे अपनाना चाहिए ताकि साइबर अपराध प्रतिक्रिया तेज, प्रभावी और पीड़ित-केंद्रित हो सके। थाना स्तर पर प्रोफेशनल साइबर क्राइम इन्वेस्टिगेटर के अभाव में अप्रशिक्षित अनुसन्धान और रिकवरी नहीं हो पा रही है।

दिल्ली में डीटीसी की बसों का पहिया जाम - हड़ताल के चौथे दिन भी ठप रही व्यवस्था, यात्री हलकान

निजी ऑपरेटरों के 5000 से ज्यादा चालकों की अनिश्चितकालीन हड़ताल जारी। 1862 रुपये दिहाड़ी के खिलाफ 2000 रुपये की मांग पर अड़े चालक। परिवहन मंत्री ने अधिकांश मांगें मानने का दावा किया

रिपोर्ट: पत्रकार हंसराज परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक संवाददाता।

दिल्ली परिवहन निगम (DTC) के अंतर्गत निजी कंसेशनरों द्वारा संचालित क्लस्टर बसों के चालकों की हड़ताल शुरुवार को चौथे दिन भी जारी रही। हड़ताल के कारण दिल्ली की लगभग 6500 में से 5000 बसें सड़कों से गायब रह गईं, जिससे दैनिक यात्रियों, छात्रों और महिला यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। मेट्रो स्टेशनों पर रिकॉर्ड भीड़ देखी गई।

1. हड़ताल की पृष्ठभूमि क्या है ?

जानकारी के अनुसार लगभग 2600 अस्थायी चालक जो पूर्व में PUC पेट्रोल पंपों पर ड्यूटी कर रहे थे, उन्हें इमरजेंसी ट्रांसफर कर डिपो से बस निकालने के लिए लगाया गया है। हड़ताली चालकों का आरोप है कि कई चालक घर पर डिपो ट्रांसफर का इंतजार कर रहे हैं, जबकि दूसरे डिपो में भेजे जाने से उन्हें आने-जाने में भारी समस्या हो रही है।

2. चालकों की प्रमुख मांगें -

- DTC कर्मचारी एकता यूनियन के अनुसार उनकी मांगें इस प्रकार हैं:

- दैनिक मानदेय 862 रुपये से बढ़ाकर 2000 रुपये किया जाए।



- चिकित्सा सुविधा, जीवन बीमा और दुर्घटना बीमा दिया जाए।
- सालाना बोनस, CL/EL और सभी सरकारी छुट्टियों का भुगतान।

- समान काम के लिए समान वेतन लागू हो।

- ओवरटाइम और अतिरिक्त किलोमीटर का उचित मुआवजा।

3. यात्रियों पर सीधा असर -

- बसें न चलने से ITO, कोरोल बाग, नरेला, बवाना, पीरागढ़ी,

द्वारका सहित कई रूटों पर यात्रियों को घंटों इंतजार करना पड़ा। महिला यात्रियों को मुश्त यात्रा सुविधा नहीं मिल पा रही है। ऑटो और ई-रिक्षा चालकों द्वारा 20-30 रुपये के सफर के 80-100 रुपये तक वसूल जाने की शिकायतें मिली हैं। वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में DMRC को 17 सितंबर को 82.44 लाख यात्रियों के साथ अब तक का सर्वाधिक भीड़ का रिकॉर्ड दर्ज करना पड़ा और 32 अतिरिक्त फेरे चलाने पड़े।

4. प्रशासन का पक्ष और विवाद -

दिल्ली के परिवहन मंत्री पंकज कुमार सिंह ने स्पष्ट किया है कि हड़ताल DTC के स्थायी कर्मचारियों की नहीं, बल्कि निजी ऑपरेटरों के चालकों की है। उन्होंने कहा कि चिकित्सा सुविधा, बीमा और छुट्टियों जैसी मांगें ऑपरेटरों ने मान ली हैं और वेतन वृद्धि का प्रस्ताव श्रम विभाग को भेजा गया है। उन्होंने चालकों से काम पर लौटने की अपील की है।



इलाज है।
याद रखिए - फेफड़े एक बार सख्त
(फाइब्रोसिस) हो गए तो वापस नर्म नहीं
होते। इसलिए जल्दी पहचान ही सबसे बड़ा
इलाज है।

महर्षि दधीचि जयन्ती - भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि तदनुसार 19 सितम्बर



परम त्यागी महर्षि दधीचि का लोक कल्याण के लिए सर्वोच्च बलिदान

लेखक :- गोवर्द्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू', परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

सतयुग काल में महातपोबली, शिव भक्त महर्षि दधीचि ने संसार के लिए कल्याण व त्याग की भावना रख, वृत्तासुर का नाश करने के लिए अपनी अस्थियों का दान कर बड़े ही सम्मानित व पूजनीय तो हुवे ही साथ ही सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति में सर्वोच्च दानवीर के रूप में उनका नाम लिया जाता है।

महर्षि दधीचि को अपनी अस्थियों का दान करने की आवश्यकता क्यों पड़ी के जबाब में जान लें - इस सम्बन्ध में पौराणिक कथा है कि एक बार देवराज इन्द्र की सभा में देवगुरु बृहस्पति आए। अहंकार से चूर इन्द्र गुरु बृहस्पति के सम्मान में उठकर खड़े नहीं हुए। बृहस्पति ने इसे अपना अपमान समझा और देवताओं को छोड़कर चले गए। देवताओं ने विश्वरूप को अपना गुरु बनाकर काम चलाना पड़ा, किन्तु विश्वरूप देवताओं से थकाकर असुरों को भी यज्ञ-भाग दे देता था। इन्द्र ने उस पर अवेशित होकर उसका सिर काट दिया।



विश्वरूप त्वष्टा ऋषि का पुत्र था। उन्होंने क्रोधित होकर इन्द्र को मारने के लिए महाबली वृत्रासुर को पैदा किया। महाबली वृत्रासुर के भय से इन्द्र अपना सिंहासन छोड़कर देवताओं के साथ इधर-उधर भटकने लगे।

ब्रह्मदेव ने वृत्तासुर को मारने के लिए वज्र बनाने के लिए देवराज इन्द्र को तपोबली महर्षि दधीचि के पास उनकी हड्डियाँ माँगने के लिये भेजा। उन्होंने महर्षि से प्रार्थना करते हुए तीनों लोकों की भलाई के

लिए अपनी हड्डियाँ दान में माँगीं। महर्षि दधीचि ने संसार के कल्याण के लिए अपना शरीर दान कर दिया।

इस तरह महर्षि दधीचि द्वारा दान की गयी हड्डियों से वज्र बना और वृत्रासुर मारा गया। और सारी मानव जाती का कल्याण हुआ।

इस तरह एक महान ऋषि के अतुलनीय त्याग से देवराज इन्द्र की जान बच पायी और तीनों लोक सुखी हो गए।

गुस्से में हम चिल्लाते क्यों हैं? संत की कहानी में छिपा है दिलों की दूरी का विज्ञान - जब प्रेम गहरा हो तो आंखें ही बोलती हैं



शोर गले का नहीं, दूर हुए दिलों का है; धीमी आवाज रिश्तों को बचाती है, तेज आवाज उन्हें तोड़ती है

पिंकी कुंडू, सामाजिक परामर्शदाता एवं नेत्री भाजपा

सवाल जो हर घर का है एक बार एक संत ने अपने शिष्यों से पूछा -

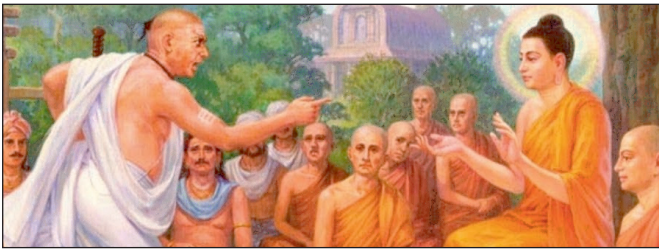
“जब दो लोग एक दूसरे पर गुस्सा करते हैं तो जोर-जोर से चिल्लाते क्यों हैं? जबकि वे तो बिल्कुल पास-पास ही खड़े होते हैं?”

एक शिष्य ने कहा - शांति खो देते हैं इसलिए।

संत मुस्कुराए और बोले - यही तो रहस्य है। चिल्लाना दूरी का माप है, गले की ताकत का नहीं। मुख्य बिंदुवार - कहानी के 4 पड़ाव और उसका गहरा अर्थ

बिंदु 1: तथ्य - कहानी क्या कहती है? संत ने समझाया:

- गुस्से में: जब दो लोग नाराज होते हैं तो दिलों में दूरियां बढ़ जाती हैं। दूर तक आवाज पहुंचाने के लिए चिल्लाना पड़ता है।
- प्रेम में: जब प्रेम होता है तो दिल करीब होते हैं, इसलिए धीरे-धीरे बात भी सुनाई देती है।
- गहरे प्रेम में: प्रगाढ़ प्रेम में फुसफुसाहट भी काफी है।
- परम प्रेम में: ऐसी अवस्था भी आती है कि बोलने की जरूरत ही नहीं, आंख देखकर ही बात समझ आ जाती है। और अंत में सच्चावनी - र ध्यान रखें, दूरियां इतनी न बढ़ जाएं कि वापस आना ही मुमकिन न हो।
- बिंदु 2: धार्मिक दृष्टिकोण - हमारे शास्त्र क्या कहते हैं?



- गीता - अध्याय 2, श्लोक 63: क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृति विभ्रमः। - क्रोध से भ्रम पैदा होता है, भ्रम से बुद्धि का नाश होता है। चिल्लाना उसी बुद्धि-नाश की पहली सीढ़ी है।

- बुद्ध वचन: जब तुम गुस्से में होते हो तो तुम दूसरे को सजा नहीं दे रहे, तुम खुद जहर पीकर उम्मीद कर रहे हो कि दूसरा मरेगा।

- संत कबीर: बोली एक अनमोल है, जो कोई बोले जानि। हिये तराजू तौलिके, तब मुख बाहर आनि।

- गुरु ग्रंथ साहिब: मीठी बोली से ही मन जीते जाते हैं, कड़वी बोली तीर से भी तेज घाव करती है।

- ईसाई और इस्लाम में भी: जीभ पर काबू को सबसे बड़ी तपस्या बताया गया है।

बिंदु 3: वैज्ञानिक दृष्टिकोण - गुस्से में शरीर में क्या होता है? यह केवल भावना नहीं, शरीर विज्ञान भी है:

- Amaygdala Hijack: गुस्से में हमारे दिमाग का भावनात्मक हिस्सा (Amygdala) तर्क वाले हिस्से (Prefrontal Cortex) पर हावी हो जाता है। वैज्ञानिक डेनिलसन गोलमैन इसे Hijack कहते हैं। तभी हम चिल्लाते हैं, बाद में पछताते हैं।
- हार्मोन का तूफान: गुस्से में एड्रेनालाईन और कोर्टिसोल तेजी से बढ़ता है। दिल की धड़कन 100 से 150 तक, ब्लड प्रेशर बढ़ता है, आवाज तेज होना शरीर की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है।
- ध्वनि का मनोविज्ञान: शोध कहते हैं - 80 डेसिबल से ऊपर की आवाज सुनने वाले के दिमाग में खतरे का सिग्नल भेजती है। वह सुनना बंद कर, लड़ना या भागना शुरू कर देता है। इसलिए चिल्लाने से बात पहुंचती नहीं, बल्कि संवाद टूट जाता है।
- धीमी आवाज का विज्ञान: जब आप धीरे बोलते हैं तो सामने वाले को सुनने के लिए करीब आना पड़ता है।

करीब आना ही दिलों की दूरी को कम करना है। डॉक्टर कहते हैं - धीरे बोलने से आपका अपना BP भी 10-15% कम हो जाता है।

बिंदु 4: जनहित में - आज के परिवार और समाज के लिए सीख आज हम सबसे ज्यादा कहां चिल्लाते हैं?

- घर में - पति-पत्नी, माता-पिता और बच्चों पर

- सड़क पर - हॉर्न और गाली के रूप में

- दफ्तर और सोशल मीडिया पर - कैपिटल लेटर में लिखकर

संत की सीख को जीवन में कैसे उतारें?

- 5 सेकंड का नियम: गुस्सा आए तो 5 सेकंड रुको, एक गिलास पानी पियो। यह Amygdala Hijack को रोकता है।
- आवाज नहीं, बात ऊंची करो: डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम कहते थे - अपना कद इतना ऊंचा करो कि आपको चिल्लाना न पड़े।
- आंखों से बात: दिन में एक बार बिना मोबाइल के 2 मिनट परिवार की आंख में देखकर बात करो। यह प्रेम की चौथी अवस्था का अभ्यास है।
- दूरी नापो: जब भी बहस हो, खुद से पूछो - क्या मैं इस रिश्ते में पूरी बड़ा रहा हूं या कम कर रहा हूं?
- निष्कर्ष: गुस्से में चिल्लाना इस बात का सबूत है कि हम शरीर से पास हैं, पर दिल से कौसी दूर चले गए हैं। DTC के चालक हों, मंदिर में भक्त हों या घर में परिवार - हर जगह संकट का मूल वही है - संवाद की कमी और दिलों की दूरी।
- याद रखिए, जो बात फुसफुसा कर कही जा सकती है, उसे चिल्ला कर कहने पर वह अपमान बन जाती है। और अपमान की दूरी को वापस तय करना सबसे कठिन है। इसलिए अगली बार गुस्सा आए तो चिल्लाइए मत, करीब आइए।

पापा, आपकी सीख आज भी मेरे साथ है - एक पुत्र के हृदय की मार्मिक अभिव्यक्ति

चिंतक कवि एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी की कलम से पिता को समर्पित भावपूर्ण श्रद्धांजलि, जो हर पाठक के दिल को छू जाएगी

प्रस्तुतकर्ता पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

पिता केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि जीवन भर का संस्कार होता है। गोंदिया, महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध चिंतक कवि एवं अधिवक्ता किशन सनमुखदास भावनानी ने अपनी नवीनतम कविता में इसी शाश्वत सत्य को अत्यंत मार्मिकता से उकेरा है। यह कविता उन सभी के लिए है जिन्होंने अपने पिता को खोया है, पर उनकी सीख को आज भी अपने हृदय में जीवित रखा है।

कवि परिचय - तथ्य बॉक्स:

- कवि का नाम: चिंतक कवि एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी
- स्थान: गोंदिया, महाराष्ट्र
- कविता का विषय: पिता-पुत्र का अटूट संबंध, संस्कार और जीवन-मूल्य

पापा, आपकी सीख आज भी मेरे साथ है। पापा, आप तो चले गए, अब आवाज कहाँ से आएगी, आपकी वो प्यारी भर डौट, फिर कहाँ सुनाई दे पाएगी। न सिर पर आपका हाथ रहा, न चेहरे की वो मुस्कान, फिर भी हर धड़कन में बसता है, आपका ही प्यार महान। जब राहों में अंधेरा छाता है, आपकी सीख राह दिखाती है, मुश्किल चाहे जितनी आए, हिम्मत करना सिखाती है। गिरकर फिर से उठना मैंने, आपसे ही तो जाना है, आपके दिए संस्कारों को, जीवन भर निभाना है। आपकी मेहनत की हर बूंद में, मेरे सपनों की पहचान है, आपके त्याग की छाया में, आज भी मेरा जहान है। आपने जो चरित्र दिया, वही मेरी

- विधा: भाव-गीत / श्रद्धांजलि

कविता

मूल कविता - पापा, आपकी सीख आज भी मेरे साथ है।

पापा, आप तो चले गए, अब आवाज कहाँ से आएगी, आपकी वो प्यारी भर डौट, फिर कहाँ सुनाई दे पाएगी।

न सिर पर आपका हाथ रहा, न चेहरे की वो मुस्कान, फिर भी हर धड़कन में बसता है, आपका ही प्यार महान।

जब राहों में अंधेरा छाता है, आपकी सीख राह दिखाती है, मुश्किल चाहे जितनी आए, हिम्मत करना सिखाती है।

गिरकर फिर से उठना मैंने, आपसे ही तो जाना है, आपके दिए संस्कारों को, जीवन भर निभाना है।

आपकी मेहनत की हर बूंद में, मेरे सपनों की पहचान है, आपके त्याग की छाया में, आज भी मेरा जहान है।

आपने जो चरित्र दिया, वही मेरी

सबसे बड़ी शान, आप नहीं हैं पास मगर, हर कदम साथ आपका सम्मान।

गलत राह जब बुलाती है, आपकी बातें रोक लेती हैं,

सच्चाई की कठिन राह पर, आपकी यादें साथ देती हैं।

दुनिया चाहे कुछ भी कहे, मैं संस्कार नहीं छोड़ूंगा,

आपके नाम की गरिमा को, जीवन भर ऊँचा रखूंगा।

पापा, आपकी तस्वीर नहीं, आपकी सीख मेरे पास है।

आपकी यादों की खुशबू में, आज भी आपका एहसास है।

सनमुख दूर चले गए लेकिन, दिल से कभी जुदा नहीं होंगे,

जब तक सँसरे चलती रहेंगी, पापा आप मेरे साथ ही होंगे।

कविता के मुख्य बिंदु - संपादकीय दृष्टिकोण से:

- शारीरिक अनुपस्थिति और भावनात्मक उपस्थिति का द्वंद्व: कवि ने पहले ही बंद में यह स्पष्ट किया है कि पिता का हाथ और मुस्कान भले ही न रही

हो, पर उनका प्यार हर धड़कन में जीवित है।

- पिता ही जीवन का मार्गदर्शक: अंधेरे में राह दिखाना, मुश्किलों में हिम्मत देना और गिरकर उठाना सिखाना - यह पिता की सबसे बड़ी सीख के रूप में रेखांकित है।
- त्याग और चरित्र की विरासत: कविता पिता की मेहनत और त्याग को पुत्र के सपनों और संसार का आधार बताती है, जो भारतीय संस्कृति के मूल्यों को दर्शाता है।
- संस्कारों का संकल्प: यह सिर्फ शोककविता नहीं, बल्कि एक संकल्प है - गलत राह पर न जाना और पिता के नाम की गरिमा को ऊँचा रखना।
- सीख ही सच्ची तस्वीर है: अंतिम पंक्तियों का संदेश अत्यंत गहरा है - पिता की तस्वीर से बड़ी उनकी दी हुई सीख और यादों की खुशबू है।

संपादकीय नोट: यह कविता आज की युवा पीढ़ी को अपने मूल्यों से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है। पितृ पक्ष के करीब आ रहे समय में ऐसी रचनाएँ समाज को भावनात्मक रूप से जोड़ती हैं।

जैन श्रद्धालुओं ने दशलक्षण पर्व के तीसरे दिन मनाया “उत्तम आर्जव धर्म”: शनिवार को होगी “उत्तम शौच धर्म” की आराधना

“कूटिलता और मायाचारी का परित्याग ही उत्तम आर्जव धर्म”

विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक जयपुर

राजधानी जयपुर सहित देश-दुनिया के दिग्गज जैन मंदिरों में शुक्रवार को दशलक्षण पर्व के तीसरे दिन “उत्तम आर्जव धर्म” की आराधना श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ की गई। इस अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं ने जिनालयों में २4 तीर्थंकर भगवानों का कलशाभिषेक एवं शान्तिधारा कर जगत में आपसी भाईदारा बढ़े, मानव जीवन में संवेदना का गहरा बढ़े तथा छल-कपट एवं मायाचारी का नाश हो, ऐसी गंगल भावना के साथ श्रद्धालुओं ने भगवान की पूजा-श्रद्धा एवं महार्घ अर्पित किए। श्रद्धालु भारतीय दिग्गज जैन युवा एकता संघ के

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि “गन, दवान और काय की कूटिलता का परित्याग करके पित में सरल एवं निष्कपट भाव धारण करना ही उत्तम आर्जव धर्म कहलाता है। उत्तम आर्जव धर्म के समान संसार में कुछ भी प्रशंसनीय नहीं है। आत्र प्रत्येक प्राणी किसी न किसी रूप में मायाचार से ग्रस्त है। यही माया मनुष्य को संसार में नष्टकारी है।” उन्होंने कहा कि जिस प्रकार छोटी-सी बिगाही पूरे घर को जलाकर राख कर सकती है, उसी प्रकार जीवन में थोड़ा-सा भी छल-कपट व मायाचार व्रत, संयम और तप के द्वारा अर्जित पुण्य कर्मों को क्षणभर में नष्ट कर सकता है। गन में जैसे विचार हों, वाणी में भी वैसे ही भाव हों और उसी के अनुरूप शरीर की चेष्टाएँ हों—यही सरलता और निष्कपटता जीवन को सुख एवं शान्ति प्रदान करती है। “जो व्यक्ति मायाचारी होता है, उसका आवरण टूट-भेड़ा और कूटिल होता है। मायाचारी व्यक्ति दूसरों को छल सकता है, लेकिन अंततः वही मायाचार

उसके जीवन में शान्ति और अविशवास का कारण बनता है। जिस व्यक्ति के जीवन में छल-कपट अधिक होता है, वह लोगों का विश्वास और सम्मान खो देता है।” उन्होंने कहा कि उत्तम आर्जव धर्म हमें अपने भीतर जाँकने की प्रेरणा देता है। हमें यह विचार करना चाहिए कि हमारे व्यवहार, वाणी और कर्मों में कितनी सरलता और निष्कपटता है। छल-कपट का त्याग कर जीवन में सरल, सहज और पारदर्शी बनना ही उत्तम आर्जव धर्म की वास्तविक शिक्षा है। शनिवार को दशलक्षण पर्व के चतुर्थ दिवस “उत्तम शौच धर्म” की आराधना की जाएगी। साथ ही जैन धर्म के आठवें तीर्थंकर भगवान पुण्यदत्त स्वामी के मोक्ष कल्याणक पर्व की भी श्रद्धापूर्वक आराधना की जाएगी। युवा एकता संघ की धार्मिक नृत्य प्रतियोगिता शनिवार को श्रद्धालु भारतीय दिग्गज जैन युवा एकता संघ, मानसरोवर संगम द्वारा शनिवार को

सायं 7:30 बजे से वरुण पथ मानसरोवर दिग्गज जैन मंदिर के परिसर में “जिन भक्ति—प्राज्ञ संगम” धार्मिक नृत्य प्रतियोगिता मनोसद का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज के युवक-युवतियों की प्रतिभा को गंव प्रदान करने के साथ उन्हें धर्म एवं संस्कारों से जोड़ना है। कार्यक्रम संयोजक धिया बाकलीवाल, संगीता काला और ध्वनिका अग्रनेरा ने बताया कि प्रतियोगिता में समाज के युवक एवं युवतियाँ धार्मिक भजनों पर नृत्य प्रस्तुत करेंगी। इसके साथ ही धार्मिक प्रश्न प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाएगा तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा। इस आयोजन में समाजसेवी सुरेश चंद जैन बांदीकुई वाले, राजेंद्र जैन बूंदी वाले, राकेश लुहाड़िया, माणंदर जैन खेड़ली वाले, सोरभ जैन, अभिनव जैन, पंकज गंगवाल, तिजारिया जैन जवेसी, श्रद्धालु श्रद्धांशु इत्यादि सहित बड़ी संख्या में समाज सेवक संभूतिमूर्ति लगे।

राधाष्टमी (19 सितम्बर 2026) पर विशेष : राधा कृष्ण, कृष्ण हैं राधा एक रूप दोऊ प्रीत अगाधा

“यूपी रत्न” डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक वृन्दावन

रस साम्राज्ञी श्रीराधा रानी परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्ण की अचिंत शक्ति हैं |उनकी कृपा से ही कृष्ण-तत्व की प्राप्ति होती है |इसीलिए इनमें से किसी एक की उपासना से भी दोनों की प्राप्ति सुनिश्चित है | कृष्ण की शक्ति हैं राधा, कृष्ण की आत्मा हैं राधा | कृष्ण शब्द हैं तो राधा अर्थ, कृष्ण गीत हैं तो राधा संगीत, कृष्ण वंशी हैं तो राधा स्वर, कृष्ण समुद्र हैं तो राधा तरंग, कृष्ण फूल हैं तो राधा उसकी सुगन्ध | राधा के आराधकों ने कृष्ण और राधा का एकाकार स्वरूप दर्शाने के अनेक प्रयास किये हैं | सन्त-महात्माओं ने कृष्ण तत्व व राधा तत्व को अभिन्न माना है | अनेक विद्वानों की यह मान्यता है कि श्रीकृष्ण और राधा अलग-अलग होते हुए भी एक हैं | पहली समानता तो यही है कि इन दोनों का जन्म भाद्रपद मास की अष्टमी को हुआ | कृष्ण का जन्म कृष्ण पक्ष की अष्टमी को हुआ, राधा का जन्म शुक्ल पक्ष की अष्टमी को | “नारद पंचरात्र” के ज्ञानामृत सार के अनुसार राधा और कृष्ण एक ही शक्ति के दो रूप ही हैं | वहीं चैतन्य सम्प्रदाय (गौड़ीय सम्प्रदाय) भी राधा और कृष्ण में भिन्नता को नहीं मानता है | भगवान श्रीकृष्ण की एक पराशक्ति हैं, जिसका नाम आल्हादिनी शक्ति राधा है | उसे स्वरूप शक्ति भी कहते हैं | वे श्रीकृष्ण से अभिन्न हैं | यह भी मान्यता है कि “श्रीकृष्ण” में “श्री” शब्द राधा रानी के लिए प्रयुक्त हुआ है | सूरदास जी ने अपने ग्रन्थ “सूरसागर” के एक दोहे में यह लिखा है कि श्रीकृष्ण की सोलह हजार एक सौ रानियाँ मात्र देह हैं, जबकि उनकी आत्मा राधा हैं | कहा भी गया है- राधा कृष्ण, कृष्ण हैं राधा | एक रूप दोऊ प्रीत अगाधा | |

जगतजननी राधा को भगवान श्रीकृष्ण की स्वरूपभूता आल्हादिनी शक्ति माना गया है | “पद्मपुराण” में कहा गया है कि राधा, श्रीकृष्ण की आत्मा हैं | महर्षि वेदव्यास जी ने लिखा है कि श्रीकृष्ण आत्माराम हैं और उनकी आत्मा राधा हैं | वात्सल्य, सख्य और श्रृंगार की रस त्रिपुटि का प्रशस्त आधार लेकर अष्टछाप के भक्त हृदय महाकवियों ने जिस महाभाव की लोकमंगल प्रतिष्ठा भक्ति काव्य जगत में की गई है, उसकी मूल प्रेरक विधायिका शक्ति राधा ही हैं | वह रस की अंतः श्रोत भी हैं और रस की अतुल महानिधि भी | उनकी इस रस निधिता में समग्र शक्तियाँ अंतर्निहित हैं | संस्कृत साहित्य के अंदर राधा को काव्य और भक्ति दोनों ही क्षेत्रों में समादर देते हुए प्रेयसी, नायिका और आराध्या आदि के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है | भगवान श्रीकृष्ण की वंशी के अवतार श्रीरहित हरिवंश महाप्रभु ने तो राधा को भगवान श्रीकृष्ण से भी अधिक प्रधानता दी है | उन्होंने उन्हें अपना इष्ट और गुरु दोनों ही माना है | यह तक कि उन्होंने अपने सम्प्रदाय तक का नाम

“श्रीराधावल्लभ सम्प्रदाय” रखा | जो भी हो ब्रज में राधा की श्रीकृष्ण से भी अधिक मान्यता है | यहां तक कहा जाता है कि उन्होंने यशोदानंदन तक को पूर्णत्व प्रदान किया | वस्तुतः यहाँ चहुँओर उनका ही साम्राज्य है | यहाँ प्रत्येक शुभकार्य का श्रीगणेश ‘श्री राधे’ के स्मरण से एवं पारस्परिक अभिवादन ‘राधे-राधे’ कहकर ही किया जाता है | हो भी क्यों न, राधा लोक पितामह ब्रह्मा एवं भगवान शिव तक की भी वन्दनीय और उपास्य हैं |

जगदसृष्टा ब्रह्मा जी द्वारा वरदान प्राप्त कर राजा सुचन्द्र एवं उनकी पत्नी कलावती कालांतर में वृषभानु एवं कीर्तिदा हुए | इन्हीं की पुत्री के रूप में राधा रानी ने आज से 5000 वर्ष से भी अधिक पूर्व मथुरा जिले के गोकुल-महावन कस्बे के निकट रावल ग्राम में जन्म लिया था | बताया जाता है कि वृषभानु एवं कीर्तिदा को राधा रानी की प्राप्ति की यमुना महारानी की घोर तपस्या करने के बाद हुई थी | राधा रानी के जन्म के सम्बंध में यह भी कहा जाता है कि वृषभानु भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को जब एक सरोवर के पास से गुजर रहे थे तब उन्हें मध्यान्ह 12 बजे एक सघन कुंज की झुकी वृक्षावलि के पास एक बालिका कमल के फूल पर तैरती हुई मिली | जिसे उन्होंने अपनी पुत्री के रूप में अपना लिया |

बाद को वृषभानु कंस के अत्याचारों से तंग होकर रावल से बरसाना चले गए | एक बार जब कंस वृषभानु जी को मारने के लिए अपनी सेना सहित बरसाना की ओर गया तो वह राधा रानी की दिव्य शक्ति से बरसाना की सीमा में घुसते ही स्त्री बन गया और उसकी सारी सेना पत्थर बन गयी | एक दिन जब देवीर्षि नारद विचरणा करते हुए बरसाना आये तो उन्होंने उसे पहचान लिया | उन्होंने उससे इस स्वरूप का कारण पूछा | कंस ने उनके पैरों पर पड़कर सारी घटना सुनाई | नारद जी ने ध्यान लगाकर इसे राधा रानी की महिमा बताया | अतः वह इसे वृषभानु जी के महल में ले गए | वहां जाकर कंस बहुत गिड़गिड़ाया और उनसे अपने किये हुए कि क्षमा मांगी | इस पर राधा रानी ने उससे यह कहा कि अब तुम यहाँ छः महीने तक रहो और गोबर के उपले थापकर बरसाना की गोपियों की इस कार्य

में मदद करो | छः महीने की समाप्ति के अंतिम दिन तुम वृषभानु कुंड में स्नान कर चुपचाप मथुरा चले जाना | उसके बाद तुम स्वतः अपने पुरुष भेष में आ जाओगे | कंस ने ऐसा ही किया | छः माह के

आपकी ही गोद में अपनी समस्त लीलाएं करूंगा | इस पर ब्रह्मा जी अत्यंत प्रसन्न होकर बरसाना में आ विराजे | कालांतर में एक बार जब देवीर्षि नारद के अवतार ब्रजाचार्य नारायणभट्ट बरसाना स्थित ब्रह्मेश्वर गिरि नामक पर्वत पर गोपी भाव से अकेले विचरण कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि राधा रानी भी भगवान श्रीकृष्ण के साथ विचरण कर रही हैं | भट्ट जी इन दोनों के सम्मुख हाथ जोड़कर खड़े हो गये | इस पर राधा रानी ने उनसे यह कहा कि इस पर्वत में मेरी एक प्रतिमा विराजित है | उसे तुम अर्ध रात्रि में निकाल कर उसकी सेवा करो | इतना कहकर वह अंतर्धान हो गई |

भट्ट जी ने उनके कहे अनुसार प्रतिमा को खोज निकाला | साथ ही वह इस प्रतिमा का अभिषेक आदि कर पूजन-अर्चन करने लग गए | यह घटना संभवत 1626 की आषाढ़ शुक्ल द्वितीया की है | इसके बाद ब्रह्मेश्वर पर्वत पर राधा रानी का भव्य मंदिर बनवाया गया, जिसे कि श्रीजी का मंदिर या लाडली महल भी कहते हैं | इस मंदिर की अत्यधिक मान्यता है | कहा जाता है कि यदि कोई व्यक्ति ब्रज में आकर और बरसाना जाकर राधा रानी मन्दिर के दर्शन कर राधा-कृष्ण का स्मरण नहीं करता है, तो उसका ब्रज में आना निरर्थक है |

राधा रानी भगवान श्रीकृष्ण अभिन्न अंग थीं | वह आयु में श्रीकृष्ण से 11 माह बड़ी थीं | उनकी भगवान श्रीकृष्ण में अनन्य आस्था थी | वह उनके लिए हर क्षण अपने प्राण तक न्यौछावर करने के लिए तैयार रहतीं थीं | ब्रज की जीवन धन राधा रानी की महिमा अपरंपार है | विभिन्न पुराण, धार्मिक ग्रंथ एवं अनेकानेक विद्वानों द्वारा रचित पुस्तकें उनकी

उसने जैसे ही वृषभानु कुंड में स्नान किया वह अपने वास्तविक भेष में आ गया | साथ ही उसने कुंड का जल अपनी सेना पर छिड़का, जिससे उसकी सेना भी जीवित हो गयी | फिर कभी उसने बरसाना की ओर मुड़कर नहीं देखा |

रस-साम्राज्ञी राधा रानी ने नंदगांव में नंद बाबा के पुत्र के रूप रह रहे भगवान श्रीकृष्ण के साथ समूचे ब्रज में बड़ी ही अलौकिक लीलाएं की | जिन्हें की पुराणों में माया के आवरण से रहित जीव का ब्रह्म के साथ विलास बताया गया है | इन लीलाओं का रसास्वादन करने के लिए लोक पितामह ब्रह्मा तक लालायित रहे | अतएव उन्होंने एक दिन भगवान श्रीकृष्ण से यह प्रार्थना की कि वह उनकी कुंज हुए कि क्षमा मांगी | इस पर राधा रानी ने उससे यह कहा कि अब तुम यहाँ छः महीने तक रहो और गोबर के उपले थापकर बरसाना की गोपियों की इस कार्य

इस अवसर पर समूचे बरसाना में राधा अष्टमी की विकट धूम रहती है | इस पुण्य-पर्व में भाग लेने हेतु दूर-दराज से लाखों लोग बरसाना पहुँचते हैं | लोग-बागों के टोल के टोल पूरे बरसाना की पद गायन करते हुए परिक्रमा करते हैं | इस अवसर पर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो सारा बरसाना “राधामय” हो गया है |

तमाम भजन गायक जगह-जगह अपने भजनों के कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं | जगह-जगह कथा-भागवत, रासलीलाओं एवं दंगल आदि के कार्यक्रम होते हैं | साथ ही यहाँ पर विशाल भंडारे भी होते हैं, जिनमें कि बरसाना आने वालों को भरपेट नाना प्रकार के व्यंजन खिलाए जाते हैं | इस अवसर पर लोग-बाग जी भरकर रुपये-पैसे एवं अन्य वस्तुयें लुटाते हैं | समूचे ब्रजमण्डल के अलावा दूर-दराज के प्रायः सभी सिद्ध सन्त राधा रानी के प्राकट्य महोत्सव पर बरसाना पहुँचते हैं |

बरसाना वासी अपने घरों की बिजली के रंग-बिरंगे बल्बों, वन्दनवारों एवं फूलों आदि से नयनाभिराम सजावट करते हैं |

सारे का सारा बरसाना यहां आए हुए लोग-बागों से इस कदर घट जाता है कि चहुँओर मानव समुद्र हिलोरें सी लेता हुआ दिखाई देता है |

इसके बाद एक सप्ताह तक बरसाना व उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में प्रतिदिन अलग-अलग स्थानों पर प्राचीन रासलीलाओं का आयोजन किया जाता है | लोक पारम्परिक भाषा में इसे “बूढ़ी लीला” के नाम से जाना जाता है | इस दौरान नवमी को होने वाली रासलीला में भगवान श्रीकृष्ण के स्वरूप मोरकुटी पर मोर का रूप धारण करके नाचते हैं और राधा रानी की स्वरूप उन्हे लड्डुओं का भोग लगाती हैं | दसवीं को विलासगढ़ पर “शंकर लीला” होती है | एकादशी को सांखरी खोर “चोटी बन्धन” लीला होती है | इसी दिन सांयकाल प्रेम सरोवर (गाजीपुर) में राधा-कृष्ण के स्वरूप “जल विहार” की लीला करते हैं |द्वादशी को बरसाना के प्रियाकुण्ड पर श्रीकृष्ण के विवाह की लीला होती है और “जल विहार” के दर्शन होते हैं | अगले दिन बरसाना के राधा रानी मन्दिर में राधा रानी का छठी महोत्सव अत्यंत धूमधाम के साथ मनाया जाता है | पूर्णिमा को करहला में महारासलीला के दर्शन होते हैं |

राधा रानी की प्राकट्य स्थली रावल में भी राधाष्टमी तीन दिनों तक अत्यंत धूमधाम के साथ मनाई जाती है | इस मंदिर में राधा रानी के चरण दर्शन राधाष्टमी के अवसर पर अभिषेक के समय वर्ष भर में केवल इसी दिन एक बार होते हैं | यहां मध्यान्ह 12 बजे मन्दिर के गभं गृह की पूजा व प्राकट्य उत्सव, अपराह्न 2 बजे रासलीला एवं सांय काल यहां के गोकुलनाथ मन्दिर के गोस्वामियों द्वारा राधा रानी के श्रीविग्रह का पूजन होता है | रात्रि 8 बजे षष्ठी पूजन किया जाता है | अगले दिन “वृषभानु उत्सव” के अंतर्गत झूलन के मनोरथ एवं बधाई गायन होता है |

“यूपी रत्न” डॉ. गोपाल चतुर्वेदी (लेखक प्रख्यात साहित्यकार एवं आध्यात्मिक पत्रकार हैं) वृन्दावन

स्वच्छता अभियान के तहत 47 बटालियन सीआरपीएफ ने चलाया सफाई अभियान

गया कॉलेज परिसर एवं आसपास के क्षेत्रों में की गई साफ-सफाई, लोगों को स्वच्छता के प्रति किया जागरूक

विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक गयाजी

“स्वच्छता ही सेवा-2026” अभियान के तहत 47 बटालियन सीआरपीएफ की ओर से जेल कॉम्प्लेक्स, गयाजी, बिहार के गया

क्या एक छात्र उद्यमी बन सकता है? भारत के स्टार्टअप कानून कैसे बदल रहे हैं युवा रोजगार की तस्वीर

लेखक: कोमल सिंह DME छात्र प्रस्तुतकर्ता:- पिंकी कुंड सह-संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली: लंबे समय तक विद्यार्थियों के लिए कारियर का पारंपरिक रास्ता स्पष्ट माना जाता रहा है—पढ़ाई पूरी करना, नौकरी हासिल करना और फिर अपने पेशेवर जीवन को आगे बढ़ाना। लेकिन भारत की नई पीढ़ी इस सोच को तेजी से बदल रही है। आज बड़ी संख्या में युवा कॉलेज की पढ़ाई के साथ ही अपने व्यावसायिक विचारों पर काम कर रहे हैं। कोई ऑनलाइन कारोबार शुरू कर रहा है, कोई तकनीक आधारित स्टार्टअप बना रहा है, तो कोई सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए उद्यम खड़ा कर रहा है। इस बदलाव ने रोजगार को देखने का नजरिया भी बदल दिया है। अब युवा केवल नौकरी तलाशने वाले नहीं, बल्कि रोजगार पैदा करने वाले भी बन रहे हैं।

भारत में स्टार्टअप संस्कृति के विस्तार ने इस बदलाव को गति दी है। स्टार्टअप इंडिया जैसी सरकारी पहल

ने नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने की दिशा में काम किया है। पात्र स्टार्टअप को सरकारी मान्यता, मार्गदर्शन, वित्तीय अवसरों और अन्य सहायता तक पहुंच उपलब्ध कराने के प्रयास किए गए हैं। इससे उन युवाओं के लिए भी संभावनाएं बढ़ी हैं जो पारंपरिक नौकरी के बजाय अपना व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं। हालांकि, छात्र के लिए उद्यमी बनना केवल एक अच्छा विचार रखने तक सीमित नहीं है। व्यवसाय शुरू करते समय कंपनी या फर्म के लिए उपयुक्त कानूनी ढांचा चुनना, कर संबंधी नियमों को समझना, आवश्यक पंजीकरण करना, बौद्धिक संपदा की सुरक्षा करना, अनुबंधों को समझना और वित्तीय रिकॉर्ड को व्यवस्थित रखना भी जरूरी है। एक छोटे स्तर पर ऑनलाइन कारोबार करने वाले विद्यार्थी और निवेश प्राप्त करने की तैयारी कर रहे तकनीकी स्टार्टअप की कानूनी आवश्यकताएं अलग हो सकती हैं। इसलिए शुरुआती स्तर पर सही कानूनी और वित्तीय जानकारी युवा उद्यमियों के लिए महत्वपूर्ण हो जाती है। सरकारी विभिन्न योजनाओं ने उद्यमिता को केवल बड़े शहरों और बड़े निवेशकों तक सीमित रखने के बजाय व्यापक स्तर पर पहुंचाने का प्रयास किया है। स्टार्टअप इंडिया के अलावा स्टैंड-अप इंडिया जैसी पहलें भी पात्र उद्यमियों के लिए संस्थागत ऋण और वित्तीय अवसरों तक पहुंच

बढ़ाने पर केंद्रित रही हैं। ऐसे प्रयासों ने उद्यमिता को आर्थिक विकास के साथ-साथ वित्तीय समावेशन और रोजगार सृजन से जोड़ने में भूमिका निभाई है। छात्र उद्यमिता का सबसे महत्वपूर्ण पहलू रोजगार की बदलती परिभाषा है। जब कोई विद्यार्थी अपना व्यवसाय शुरू करता है, तो शुरुआत में वह स्वयं अपने उद्यम का संचालक होता है। लेकिन जैसे-जैसे व्यवसाय बढ़ता है, उसे डेवलपर, डिजाइनर, मार्केटिंग विशेषज्ञ, शोधकर्ता, अकाउंटेंट और अन्य कर्मचारियों की आवश्यकता पड़ सकती है। इस प्रकार एक विद्यार्थी का छोटा-सा व्यावसायिक विचार आगे चलकर दूसरे युवाओं के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा कर सकता है। फिर भी उद्यमिता को आसान रास्ते के रूप में देखना सही नहीं

होगा। विद्यार्थियों के सामने पूंजी की कमी, सीमित व्यावसायिक अनुभव, कानूनी अनुपालन की जानकारी का अभाव और पढ़ाई के साथ व्यवसाय संभालने जैसी कई चुनौतियां होती हैं। हर स्टार्टअप सफल नहीं होता और हर व्यावसायिक विचार बाजार में टिक नहीं पाता। इसलिए युवाओं को केवल उद्यमिता के अवसरों के बारे में बनाना ही पर्याप्त नहीं है, उन्हें जोखिम, कानून, वित्तीय प्रबंधन और असफलता से निपटने की वास्तविक समझ भी देना आवश्यक है। यही कारण है कि उच्च शिक्षण संस्थानों में उद्यमिता और कानूनी जागरूकता को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण हो जाता है। यदि विद्यार्थियों को कंपनी गठन, कर व्यवस्था, बौद्धिक संपदा अधिकार, अनुबंध, उपभोक्ता संरक्षण और डिजिटल नियमों की बुनियादी जानकारी शिक्षा के दौरान

ही मिल जाए, तो वे अपने विचारों को अधिक जिम्मेदारी और व्यवस्थित तरीके से व्यवसाय में बदल सकते हैं। भारत में बदलती स्टार्टअप संस्कृति यह संकेत देती है कि युवा रोजगार की कहानी अब केवल नौकरी पाने तक सीमित नहीं रह गई है। आज एक विद्यार्थी के सामने यह सवाल भी हो सकता है कि वह किसी संस्था में नौकरी के हाथ करेगा, बल्कि यह भी कि वह स्वयं किस समस्या का समाधान कर सकता है और उसके समाधान के आसपास एक टिकाऊ उद्यम कैसे बनाया जा सकता है। शिक्षा और उद्यमिता का यह बढ़ता मेल भारत के युवा कार्यबल की बदलती तस्वीर को दर्शाता है, जहां एक छात्र केवल भविष्य का कर्मचारी नहीं, बल्कि भविष्य का उद्यमी और संभावित रोजगार सृजक भी हो सकता है।

●●●●●

●●●●●

●●●●●

●●●●●

जेपीएससी सीजीएल परिक्षाओं में नियुक्ति रद्द फैसले को हाईकोर्ट ने बरकरार रखा

एसआईटी की जांच निगरानी हेतु पूर्व न्यायाधीश गौतम कुमार चौधरी नियुक्त

कार्तिक कुमार परिखा, स्टेट हेड-झारखंड

रांची झारखंड हाईकोर्ट ने जेपीएससी की सीडीपीओ परीक्षा और जेएसएससी-सीजीएल के जरिए हुई नियुक्तियों को रद्द करने के राज्य सरकार के फैसले पर पहले से लगी रोक बरकरार रखी। जस्टिस दीपक रोशन की अदालत में शुक्रवार को जेपीएससी की बाल विकास परियोजना पदाधिकारी (सीडीपीओ) परीक्षा और जेएसएससी-सीजीएल समेत विभिन्न भर्ती परीक्षाओं से हुई नियुक्तियों को रद्द करने के खिलाफ दायर याचिकाओं पर एक साथ सुनवाई हुई।

सुनवाई के दौरान अदालत ने मौखिक रूप से कहा कि अब तक सामने आए तथ्यों से ऐसा प्रतीत होता है कि सभी नियुक्तियाँ सही तरीके से हुई हैं, लेकिन यह भी तथ्य है कि सभी नियुक्तियों में गड़बड़ी नहीं हुई है।

अदालत ने इस बात पर भी चिंता जताई कि जेपीएससी को परीक्षा आयोजित करने और नियुक्ति की प्रक्रिया पूरी करने में दो-तीन साल लग जाते हैं। ऐसे में एक साथ बड़ी संख्या में नियुक्तियाँ रद्द करने से उन अधिकारियों की नौकरी प्रभावित हो सकती है, जिनके खिलाफ व्यक्तिगत तौर पर कोई गड़बड़ी सामने नहीं आई है। अदालत ने भर्ती प्रक्रिया में कथित अनियमितताओं की जांच की निगरानी के लिए हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधीश गौतम कुमार चौधरी को नियुक्त किया है। वहीं, सेवानिवृत्त आईपीएस अधिकारी आरके मलिक को नोडल अधिकारी बनाया गया है। शुक्रवार की सुनवाई में

राज्य सरकार की ओर से दाखिल शपथपत्र में जेएसएससी सीजीएल परीक्षारद्द

करने के फैसले को सही ठहराते हुए कहा गया कि परीक्षा की पूरी प्रक्रिया कथित अनियमितताओं से प्रभावित हो गई थी। सरकार के अनुसार, ऐसी स्थिति में सही तरीके से सफल हुए अभ्यर्थियों और कथित तौर पर अनुचित तरीके से लाभ लेने वाले अभ्यर्थियों के बीच स्पष्ट अंतर करना

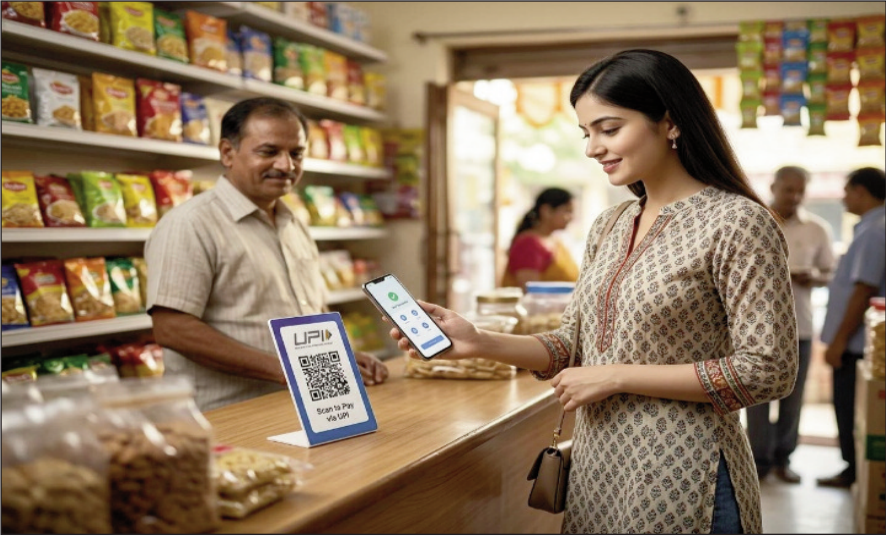
मुश्किल था। सरकार ने अपने जवाब में सुप्रीम कोर्ट के उन दिशा-निर्देशों का हवाला दिया है, जिनके अनुसार यदि किसी परीक्षा की पूरी प्रक्रिया दूषित हो जाए और सही तथा गलत तरीके से चयनित अभ्यर्थियों में अंतर करना संभव न हो तो पूरी परीक्षा रद्द की जा सकती है।

सरकार ने इसी आधार पर सीजीएल परीक्षा रद्द करने के फैसले का बचाव किया है। शपथ पत्र में कहा गया है कि सीजीएल परीक्षा से जुड़े गोपनीय कार्य आईसीएन टेक्नोलॉजी को दिए गए थे। इनमें प्रश्नपत्रों की छपाई और उन्हें परीक्षा केंद्रों तक पहुंचाने सहित अन्य कार्य शामिल थे। सरकार के अनुसार, परीक्षा में कथित गड़बड़ी के मामले में एजेंसी के सीईओ सोमेश प्रकाश समेत 28 लोगों को गिरफ्तार किया गया है और 265 लोगों को नोटिस जारी किया गया है। जांच में नेपाल के अलावा आसनसोल, कोलकाता, बिहार, झरिया और बंगाल में कथित तौर पर अभ्यर्थियों को प्रश्नों के उत्तर रटाए जाने की जानकारी मिलने का भी सरकार ने दावा किया है।

डरने लगे व्यापारी! पैसे देने पड़ेंगे, इसलिए UPI पेमेंट से इनकार! लगे ‘No UPI, Only Cash’

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: UPI पेमेंट को लेकर व्यापारियों की चिंता बढ़ गई है। चार्ज देना पड़ सकता है, इस आशंका के चलते कई जगहों पर व्यापारियों ने UPI पेमेंट लेने से इनकार करना शुरू कर दिया है। पेट्रोल पंप से लेकर बाजारों तक 'No UPI, Only Cash' के बोर्ड लगाए जा रहे हैं। ग्राहकों से अब नकद या कार्ड के जरिए भुगतान करने को कहा जा रहा है। आगे UPI भुगतान स्वीकार करने पर व्यापारियों पर अतिरिक्त खर्च का बोझ पड़ सकता है, ऐसी आशंका के चलते इसका विरोध किए जाने की खबरें सामने आ रही हैं। व्यापारियों का कहना है कि उनके कारोबार का



लाभ मार्जिन पहले से ही कम है। ऐसे में यदि UPI लेनदेन केलिए

अतिरिक्त खर्च जुड़ता है, तो कारोबार पर दबाव बढ़ सकता है।

इसलिए व्यापारी संगठन चार्ज लगाने के बजाय सरकार से सब्सिडी देने की

मांग कर रहे हैं। हालांकि, प्रस्तावित नए MDR फ्रेमवर्क के अनुसार, 15 अक्टूबर 2026 से कुछ बड़े मूल्य वाले P2M UPI लेनदेन पर 0.4 प्रतिशत MDR लागू करने का प्रावधान है। इसकी अधिकतम सीमा प्रति लेनदेन 300 रुपये तक रखी गई है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि आम ग्राहकों के हर UPI भुगतान पर चार्ज लगेगा। इसमें भुगतान स्वीकार करने वाले व्यापारी पर शुल्क लगने की बात है।

इसी को लेकर अब कई जगहों पर ऑनलाइन पेमेंट का विरोध शुरू हो गया है। डिजिटल पेमेंट पर लोगों की निर्भरता बढ़ने के बीच 'No UPI, Only Cash' के बोर्ड लगाए जाने से यह बहस और तेज हो गई है।

19 सितंबर: निमाड़ी दिवस, एक बोली नहीं — निमाड़ की सदियों पुरानी साँस है निमाड़ी

नर्मदा, नीम और निमाड़ी — निमाड़ की जीवित आत्मकथा, कहीं गीत, कहीं कहावत, कहीं माँ की पुकार — यही है निमाड़ी

लेखक प्रो आर के जैन “अरिजीत” प्रस्तुतकर्ता पिकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

भाषा तब नहीं मरती जब उसके शब्द चुक जाते हैं; वह तब सूखने लगती है, जब लोग अपनी ही बोली बोलने में संकोच करने लगते हैं। इसलिए 19 सितंबर का निमाड़ी दिवस कोई तारीख भर नहीं, निमाड़ के स्वर को पहचानने और स्वाभिमान से जीने का दिन है। नर्मदा की लहरों से खेतों की मेड़ों तक, महेश्वर के घाटों से गाँव की चौपालों तक निमाड़ी केवल संवाद नहीं—मिट्टी में रची जीवन-दृष्टि है। अखिल निमाड़ लोक परिषद (अनिलोप) की पहल से जुड़ा यह दिवस किसी बोली को सम्मान देने भर का अवसर नहीं, बल्कि उस लोक-संस्कृति को नमन है, जिसने

इतिहास, पुरातत्व, अध्यात्म और लोकजीवन को पीढ़ियों से सांस्कृतिक सूत्र में बाँधे रखा है। निमाड़ की स्मृति जब बोलती है, तो उसकी सबसे आत्मीय आवाज़ निमाड़ी में सुनाई देती है।

प्राचीन अनूप जनपद (जो नर्मदा घाटी के आसपास फैला था) से आज के खरगोन, खंडवा, बड़वानी और बुरहानपुर तक फैला निमाड़ भू-भाग नहीं, इतिहास और लोकजीवन का संगम है, जहाँ सदियों की स्मृतियाँ साँस लेती हैं। यहाँ नर्मदा केवल नदी नहीं, रेवा है; महेश्वर केवल नगर नहीं, प्राचीन महिष्मती की स्मृति है; और ओंकारेश्वर-मांधाता केवल तीर्थ नहीं, आस्था और पुराकथाओं के केंद्र हैं। महेश्वर-नवाटोली (नावड़ाटोली) के पुरातत्त्विक अवशेष नर्मदा घाटी की ताम्रपाषाणकालीन सभ्यता की

गहराई और निरंतरता के साक्षी हैं। इसी धरती पर आर्य और अनार्य सांस्कृतिक धाराएँ मिलीं और विशिष्ट लोकसंस्कृति आकार पाई, जिसमें गणगौर के गीतों की गूँज, भागोरिया हाट का उल्लास, कलगी-तुरां की स्वर-स्पर्धा और नर्मदा के प्रति अटूट श्रद्धा एक सांस्कृतिक आत्मा में घुल गए—यही निमाड़ है, जहाँ इतिहास मिट्टी में, लोक स्मृति में और संस्कृति जीवन की धड़कन में जीवित है।

निमाड़ी की पहचान केवल उसके शब्दों में नहीं, उन शब्दों से निकलती अपनी विशिष्ट ध्वनि में भी बसती है। शौरसेनी अपभ्रंश से जुड़ी इसकी भाषिक जड़ें राजस्थानी भाषा-परिवार और पश्चिमी हिंदी अंचल से संवाद करती हैं, तो मालवी, गुजराती, भीली और खानदेशी के संपर्क ने इसके शब्द-संसार को

समृद्धि दी। विलंबित ‘अs’ और प्राचीन ‘ळ’ जैसी ध्वन्यात्मक विशेषताएँ निमाड़ी को अलग पहचान देती हैं; ‘मनस’, ‘मखs’, ‘काजळ’, ‘डोळो’ जैसे शब्द केवल बोले हुए शब्द नहीं, निमाड़ की मिट्टी, स्मृति और संवेदना की आवाज़ हैं। 2011 की जनगणना में लगभग 23 लाख लोगों ने निमाड़ी को अपनी मातृभाषा बताया। यह आँकड़ा इसके सामाजिक विस्तार को भले न समेट पाए, लेकिन इतना कहना है कि निमाड़ी किसी सीमित गाँव की बोलचाल नहीं, एक व्यापक लोकसमुदाय की जीवित और अपनी पहचान बोलती हुई भाषा है।

निमाड़ी का सबसे बड़ा साहित्य वह है, जो कागज पर उतरने से पहले लोकस्मृति में रचा गया। संत सिंगाजी के निर्गुण भजनों से खेतों के श्रमगीतों तक, सोहर से ऋग्वीतों तक, विवाह-

धार्मिक गीतों से व्रतकथाओं तक—हर विधा में निमाड़ के जीवन का अनुभव और लोकस्मृति सुरक्षित है। पशु-पक्षियों की लोककथाएँ नीति-व्यवहार का बोध कराती हैं, तो लोकोक्तियाँ मौसम, पर्यावरण, श्रम और सामाजिक संबंधों का लोकज्ञान सँजोए हैं, जिसे पुस्तकालय में नहीं, जीवन में पढ़ा गया है। ‘सदा नीरा, हरs पीरा। गाँव मुलुक, मs जड़s हीरा’ जैसी पंक्तियाँ लोकबुद्धि की विरासत हैं, जिनमें साधारण शब्दों में असाधारण जीवन-दृष्टि छिपी है और जिसे आधुनिक ज्ञान की भाषा में समझने की जरूरत है। संत परंपरा, चित्रकला, लोकनृत्य और नर्मदाष्टक जैसी अभिव्यक्तियाँ इस संसार को विस्तार देती हैं—मानो निमाड़ी साहित्य किताबों से अधिक लोगों की आवाज़, स्मृति और जीवन-पद्धति में जीवित हो।

सुंदरगढ़ में बालू के अवैध कारोबार पर कार्रवाई तेज, अब नेटवर्क तक पहुंचने की चुनौती

लेखक प्रो आर के जैन “अरिजीत” प्रस्तुतकर्ता पिकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

भाषा तब नहीं मरती जब उसके शब्द चुक जाते हैं; वह तब सूखने लगती है, जब लोग अपनी ही बोली बोलने में संकोच करने लगते हैं। इसलिए 19 सितंबर का निमाड़ी दिवस कोई तारीख भर नहीं, निमाड़ के स्वर को पहचानने और स्वाभिमान से जीने का दिन है। नर्मदा की लहरों से खेतों की मेड़ों तक, महेश्वर के घाटों से गाँव की चौपालों तक निमाड़ी केवल संवाद नहीं—मिट्टी में रची जीवन-दृष्टि है। अखिल निमाड़ लोक परिषद (अनिलोप) की पहल से जुड़ा यह दिवस किसी बोली को सम्मान देने भर का अवसर नहीं, बल्कि उस लोक-संस्कृति को नमन है, जिसने इतिहास, पुरातत्व, अध्यात्म और लोकजीवन को पीढ़ियों से सांस्कृतिक सूत्र में बाँधे रखा है। निमाड़ की स्मृति जब बोलती है, तो उसकी सबसे आत्मीय आवाज़ निमाड़ी में सुनाई देती है।

प्राचीन अनूप जनपद (जो नर्मदा घाटी के आसपास फैला था) से आज के खरगोन, खंडवा, बड़वानी और बुरहानपुर तक फैला निमाड़ भू-भाग नहीं, इतिहास और लोकजीवन का संगम है, जहाँ सदियों की स्मृतियाँ साँस लेती हैं। यहाँ नर्मदा केवल नदी नहीं, रेवा है; महेश्वर केवल नगर नहीं, प्राचीन महिष्मती की स्मृति है; और ओंकारेश्वर-मांधाता केवल तीर्थ नहीं, आस्था और पुराकथाओं के केंद्र हैं। महेश्वर-नवाटोली (नावड़ाटोली) के पुरातत्त्विक अवशेष नर्मदा घाटी की ताम्रपाषाणकालीन सभ्यता की

गहराई और निरंतरता के साक्षी हैं। इसी धरती पर आर्य और अनार्य सांस्कृतिक धाराएँ मिलीं और विशिष्ट लोकसंस्कृति आकार पाई, जिसमें गणगौर के गीतों की गूँज, भागोरिया हाट का उल्लास, कलगी-तुरां की स्वर-स्पर्धा और नर्मदा के प्रति अटूट श्रद्धा एक सांस्कृतिक आत्मा में घुल गए—यही निमाड़ है, जहाँ इतिहास मिट्टी में, लोक स्मृति में और संस्कृति जीवन की धड़कन में जीवित है।

निमाड़ी की पहचान केवल उसके शब्दों में नहीं, उन शब्दों से निकलती अपनी विशिष्ट ध्वनि में भी बसती है। शौरसेनी अपभ्रंश से जुड़ी इसकी भाषिक जड़ें राजस्थानी भाषा-परिवार और पश्चिमी हिंदी अंचल से संवाद करती हैं, तो मालवी, गुजराती, भीली और खानदेशी के संपर्क ने इसके शब्द-संसार को समृद्धि दी। विलंबित ‘अs’ और प्राचीन ‘ळ’ जैसी ध्वन्यात्मक विशेषताएँ निमाड़ी को अलग पहचान देती हैं; ‘मनस’, ‘मखs’, ‘काजळ’, ‘डोळो’ जैसे शब्द केवल बोले हुए शब्द नहीं, निमाड़ की मिट्टी, स्मृति और संवेदना की आवाज़ हैं। 2011 की जनगणना में लगभग 23 लाख लोगों ने निमाड़ी को अपनी मातृभाषा बताया। यह आँकड़ा इसके सामाजिक विस्तार को भले न समेट पाए, लेकिन इतना कहना है कि निमाड़ी किसी सीमित गाँव की बोलचाल नहीं, एक व्यापक लोकसमुदाय की जीवित और अपनी पहचान बोलती हुई भाषा है।

निमाड़ी का सबसे बड़ा साहित्य वह है, जो कागज पर उतरने से पहले लोकस्मृति में रचा गया। संत सिंगाजी के निर्गुण भजनों से खेतों के श्रमगीतों तक, सोहर से ऋग्वीतों तक, विवाह-



धार्मिक गीतों से व्रतकथाओं तक—हर विधा में निमाड़ के जीवन का अनुभव और लोकस्मृति सुरक्षित है। पशु-पक्षियों की लोककथाएँ नीति-व्यवहार का बोध कराती हैं, तो लोकोक्तियाँ मौसम, पर्यावरण, श्रम और सामाजिक संबंधों का लोकज्ञान

सँजोए हैं, जिसे पुस्तकालय में नहीं, जीवन में पढ़ा गया है। ‘सदा नीरा, हरs पीरा। गाँव मुलुक, मs जड़s हीरा’ जैसी पंक्तियाँ लोकबुद्धि की विरासत हैं, जिनमें साधारण शब्दों में असाधारण जीवन-दृष्टि छिपी है और जिसे आधुनिक ज्ञान की भाषा में

समझने की जरूरत है। संत परंपरा, चित्रकला, लोकनृत्य और नर्मदाष्टक जैसी अभिव्यक्तियाँ इस संसार को विस्तार देती हैं—मानो निमाड़ी साहित्य किताबों से अधिक लोगों की आवाज़, स्मृति और जीवन-पद्धति में जीवित हो।

आधी रात महिला के घर में घुसकर हंगामा, परिवहन सचिव के नाम पर शिकायत, पुलिस ने की पूछताछ

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : परिवहन विभाग के अतिरिक्त सचिव अरुण कुमार बिश्वाल के खिलाफ गंभीर आरोप सामने आए हैं। आरोप है कि वह आधी रात एक महिला के घर में

घुसकर हंगामा करने के साथ कथित तौर पर दुर्व्यवहार किया। इस संबंध में संबंधित महिला ने खारबेलनगर थाने में शिकायत दर्ज कराई है। शिकायत के आधार पर पुलिस ने अरुण कुमार बिश्वाल को थाने बुलाकर पूछताछ की है। महिला के आरोप के अनुसार, घटना रात के

समय हुई थी। हालांकि, शिकायत से जुड़ी पूरी जानकारी और घटना के वास्तविक कारणों को लेकर पुलिस की जांच जारी है। शिकायत में लगाए गए आरोपों की सत्यता और घटना की वास्तविक परिस्थितियाँ पुलिस जांच पूरी होने के बाद ही स्पष्ट होंगी।



जनभागीदारी और सतत स्वच्छता के संदेश के साथ पूर्व तट रेलवे का ‘स्वच्छता ही सेवा-2026’ अभियान शुरू

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर : “स्वच्छता में सम्मिलित: स्वच्छ भारत, विकसित भारत” थीन के साथ पूर्व तट रेलवे की ओर से “स्वच्छता ही सेवा-2026” अभियान शुरू किया गया है। इस अभियान में जनभागीदारी, स्वच्छता और सतत कचरा प्रबंधन पर विशेष जोर दिया जा रहा है। इस अवसर पर पूर्व तट रेलवे के महाप्रबंधक श्री परमेश्वर कुंकुवात ने आज अधिकारियों और कर्मचारियों को स्वच्छता की गण्य दिशाई तथा स्वच्छता को व्यक्तिगत किस्मेटरी के रूप में ग्रहण के आग्रह किया। उन्होंने शेर कर्मचारियों से सर्वे ड्राइवर प्रस्तुत करने के साथ-साथ यात्रियों, रिटायरकों और आम जनता को स्वच्छता अभियान में सक्रिय रूप से शामिल करने का आग्रह किया। 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2026 तक चलने वाला यह अभियान पूर्व तट रेलवे मुख्यालय, सभी मंडलों, रेलवे स्टेशनों, ट्रेनों, कार्यालयों, वर्कशॉप, अस्पतालों और रेलवे ग्रावसीय कॉलोनियों में आयोजित किया जा रहा है। यह अभियान पांच प्रमुख स्तंभों पर आधारित है—“स्वच्छता टारगेट यूनिट्स का रणनीक्षण”, “स्वच्छ पाठागार—स्वच्छता के लिए युवा”, “सफाई मित्र मुख्या एवं सम्मान निर्दिष्ट”, “स्वच्छता के लिए अब नागौदारी” और “स्वच्छता से समृद्धि”।

दिल्ली की सभी डिटीसी बसों 19 तारीख को हड़ताल पर रहेंगी

हड़ताल : 19/09/2026

जब तक मांग पूरी नहीं हो जाती !

दिल्ली के सभी ड्राइवर भाइयों द्वारा !

सावधान ! 19 तारीख को कोई भी ड्राइवर सुबह बस नहीं निकालेगा !

दिल्ली के सभी ड्राइवर भाइयों का एक ही नारा -

हमारी मांगें पूरी करो !

एकता जिंदाबाद !

दिल्ली के ड्राइवर एकता जिंदाबाद !

एकता जिंदाबाद !